Govt. Degree College Bhojpur Moradabad

Name — Madhu Tyagi

Email — madhutyagi.881@gmail.com

Stream — Arts

Name of course — B.A II, Paper I History of Medieval India

Name of sub — History

Name of Topic — Sources

Name of sub-Topic — Archaeological, literary and historical works

Meta-data Keywords — Medieval India Sources

Type — Pdf Text

Scanned with CamScanner

Paper-I

मध्यकालीन स्त्रोत (Unit-1)

पुरातात्विक स्त्रोत (Archaealogical) Sources

खुदाई के दौरान प्राप्त वे पुरानी वस्तुएँ, जिनसे इतिहास की रचना में सहायता मिलती है, पुरातात्विक स्त्रोत कहलाती है, इनमे अभिलेख, मुद्रा स्मारक आदि प्रमुख है जॉन कनिंघम को भारतीय इतिहास में भारतीय पुरातत्व का पिता कहा जाता है।

साहित्यिक स्त्रोत (Literary source) साहित्य + ऐतिहासिक + विदेशी वृतांत

ऐतिहासिक ग्रंथ बाबरनामा, हुमायूँनामा तजकिरात-उल-वाकयात आइने-अकबरी, मुन्तखाब-उत-तवारीख, तबकाते अकबरी, बादशाहनामा आलमगीर नामा, नुस्खा-ए-दिलकुश मासिर-ए-आलमगीरे आदि

साहित्यिक ग्रन्थ - ~~[illegible]~~, अहमद-उल-उमेरी द्वारा रचित साहित्य

विदेशी-वृतांत, फर्नाओ नुनीज, सीजर फ्रेडरिक फादर एन्थोनी मोंसेरत रल्फ फिच, विलियम हॉकिन्स, विलियम फिंच सर थामस रो, पीटर मुण्डी टैवर्नियर, मनूची बर्नियर आदि

मध्यकालीन भारत में मुगल काल को जानने के लिए स्त्रोत महत्वपूर्ण स्थान रखते है। पुरातात्विक स्त्रोतों में मुगलकाल में बने स्मारक, सिक्के, स्थापत्य आदि से मुगल काल के सांस्कृतिक, आर्थिक स्थिति को जाना जा सकता है। इसके साथ

Scanned with CamScanner

ही साहित्यिक स्त्रोत जोकि तीन भागों में विभक्त हैं। उस समय की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक राजनीतिक आदि की स्थिति को जानने में सहायता करते हैं।

(मध्यकालीन भारत)

मुगलकालीन साहित्यिक स्त्रोत :

1. **बाबरनामा :** इसे तुजके- बाबरी भी कहा जाता है। यह बाबर की आत्मकथा है। जिसने उसने तुर्की भाषा में लिखा था। भारत की प्राकृतिक दशा का बाबर ने बहुत अच्छा वर्णन किया है। साथ ही यहाँ की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का भी वर्णन किया है। बाबर के विषय में जानने के लिए यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

2. **हुमायूँनामा :** गुलबदन बेगम ने इसकी रचना की थी। इस ग्रन्थ के अधिकांश भाग में हुमायूँ के जीवन की सफलताओं, विजय पराजय और कठिनाईयों का वर्णन किया है।

3. **तज्किरात- उल- वाकियात :** इस ग्रन्थ की रचना जौहर आफताबची ने की। हुमायूँ के विषय में जानने के लिए यह ग्रन्थ प्रमाणिक माना जाता है।

4. **तारीख–ए- शेरशाही :** अब्बास खाँ सरवानी ने अकबर के आदेश पर इस ग्रन्थ को फारसी में लिखा था। इस ग्रन्थ से शेरशाह के जीवन चरित्र और शासन प्रबंध पर प्रकाश पड़ता है।

Scanned with CamScanner

वाकेयात-ए-मुश्ताकी: लोदी और सूर काल पर प्रकाश डालने वाली सबसे पहली पुस्तक है। इस ग्रन्थ में बहलोल लोदी से लेकर अकबर के शासन काल के मध्य भाग तक का वर्णन मिलता है।

तारीख-ए-दाउदी: अब्दुल्ला ने इस ग्रन्थ की रचना सम्भवत: जहाँगीर के शासनकाल में की। इसमें उसने शेरशाह के शासनकाल के बारे में विस्तृत वर्णन किया है।

अकबरनामा: अबुल फज्ल अकबरनामा के लेखक है। यह मुगलकाल के इतिहास को जानने का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। इसके तीन भाग है। तीसरा भाग आइने अकबरी अकबरनामा का महत्वपूर्ण भाग है। पहले भाग में अमीर तैमूर से लेकर हुमायूँ तक मुगल शासको के इतिहास का वर्णन किया गया है। दूसरे और तीसरे भाग में 1602 ई० तक बादशाह अकबर के इतिहास का वर्णन है।

तबकात-ए-अकबरी: इसके लेखक निजामुद्दीन अहमद थे। इसमें मुस्लिम शासन स्थापित होने से लेकर बादशाह अकबर के इतिहास का वर्णन है।

तुजुक-ए-जहाँगीरी: यह जहाँगीर की आत्मकथा है। जहाँगीर के शासन के उन्नीसवे वर्ष तक की घटनाओं का वर्णन है।

इकबालनामा: इसे मुतामिद खाँ ने लिखा था। यह तीन भागों में है। प्रथम भाग में अमीर तैमूर के परिवार बाबर तथा हुमायूँ के काल का इतिहास है।

Scanned with CamScanner

दूसरे भाग में बादशाह अकबर के समय का इतिहास है। तथा तीसरे भाग में जहाँगीर के काल का इतिहास है।

पादशाहनामा: पादशाहनामा तीन दरबारी इतिहासकारों ने अलग लिखा है। तीनों मूलतया शाहजहाँ के काल के इतिहास को लिखा है। बाद में शाहजहाँ आगे का इतिहास लिखने के लिए अब्दुल हमीद लाहौरी को नियुक्त किया। उसने भी अपने ग्रन्थ का नाम पादशाहनामा रखा। तीसरे पादशाहनामा की रचना मुहम्मद वारिस ने की थी। बाद में मुहम्मद वारिस ने ही शाहजहाँ के काल का सम्पूर्ण इतिहास लिखा।

मुन्तखाब-उल-लबाब: इसकी रचना खफी खाँ ने की थी। इस ग्रन्थ में उसने मुगल काल के इतिहास को बादशाह बाबर के भारत पर आक्रमण से लेकर उत्तरकालीन मुगल बादशाह मुहम्मदशाह के प्रथम पन्द्रह वर्षों तक लिखा है।

नुसखा-ए-दिलकुशा: उसके लेखक भीमसेन थे। उसने यह ग्रन्थ तब लिखा जब वह राज्य की सेवा से पूर्णतया मुक्त था। इस कारण उसने पूरी निष्पक्षता से तत्कालीन घटनाओं का वर्णन किया।

कानून-ए-हुमायूँ: यह खवांदमीर की अन्तिम रचना है। यह हुमायूँ के काल का एक समसामयिक ग्रन्थ है। जिसमें उसने तत्कालीन समय की आँखों देखी घटनाओं का वर्णन किया।

तोहफा-ए-अकबरशाही: अब्बास खाँ सरवानी यह पुस्तक अकबर के आदेश पर लिखी थी। इसमें

Scanned with CamScanner

शेरशाह के शासन का विस्तृत विवरण मिलता है।

विदेशी वृत्तांत :-

फादर एन्थोनी मोंसेरात (1578 ई०)

फादर मोंसेरात पुर्तगीज यात्री था जो फादर एक्वाविवा के साथ 1578 ई० में अकबर के दरबार में आया। यह अकबर के दरबार में आने वाले पहले इसाई मिशन में सम्मिलित था। अपने यात्रा विवरण में उसने 1580-82 ई० तक के काल में अकबर के दरबार का विस्तृत विवरण दिया है। उसने मुगल की सामाजिक, धार्मिक व दार्शनिक स्थिति को विस्तृत रूप से बताया है। तत्कालीन समय में प्रचलित सती प्रथा का वर्णन भी उसने अपने वृत्तांत में किया है।

राल्फ फिच (1583-91 ई०)

यह एक अंग्रेज व्यापारी था। राल्फ फिच अकबर के समय में भारत आया। राल्फ फिच पहला अंग्रेज यात्री था जिसने भारतीयों के रहन-सहन, वेश-भूषा और रीति-रिवाजों का उल्लेख किया है। उसने आगरा व फतेहपुर सीकरी दोनों को लंदन से बड़ा कहा है। उसने बाल विवाह प्रथा के बारे में भी विस्तार से लिखा है।

विलियम हॉकिन्स : (1608-1611)

यह जहाँगीर के दरबार में अंग्रेज राजदूत के रूप में आया था। इसके यात्रा वृत्तान्त में जहाँगीर के शासन काल का विस्तृत विवरण उपलब्ध है।

सर टॉमस रो (1615-1619 ई०) यह अंग्रेज शिष्टमण्डल के नेता के रूप में जहाँगीर के दरबार में आया था पूर्वी द्वीपों की यात्रा नामक यात्रा विवरण में इसने

Scanned with CamScanner

मुगल दरबार का सजीव वर्णन किया है तथा तत्कालीन आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है।

पीटर मुंडी: (1630-34 ई०)
यह इटालियन यात्री शाहजहाँ के काल में भारत आया था। इसने मुगलकालीन जनमानस की आन्तरिक दशा का विस्तृत विवरण दिया है।

ट्रैवर्नियर (1638-1663 ई०) फ्रांसीसी यात्री ट्रैवर्नियर ने अपने यात्रा विवरण "ट्रैवल्स इन इंडिया" में शाहजहाँ और औरंगजेब के शासन काल का विवरण प्रस्तुत किया है।

निकोली मनूची (1653-1708 ई०) इस इटालियन यात्री ने "स्टोरियो डी मोगोर" में हिन्दुस्तान के औद्योगिक बाजारों का विस्तृत उल्लेख करते हुए तत्कालीन आर्थिक स्थिति का प्रामाणिक विवरण दिया है।

फ्रांसिस बर्नियर (1656-1717 ई०)
इस फ्रांसीसी यात्री ने 'हिस्ट्री ऑफ द लेट रेबेलियन इन द स्टेट्स ऑफ द ग्रेट मुगल' में तथा 'ट्रेवल इन द मुगल एम्पायर' में तत्कालीन भारत की सामान्य दशा का विस्तृत व प्रामाणिक उल्लेख किया है।

साहित्यिक स्रोत. रणछोड़ भट्ट राजप्रशस्ति (संस्कृत)
गुरु गोविन्द सिंह: जफरनामा (गुरुमुखी) पत्र

महेश ठाकुर : अकबर के शासन काल का इतिहास (संस्कृत)
पंडित जगन्नाथ : रस गंगाधर (संस्कृत)
आदि साहित्यिक ग्रन्थों से मुगल काल के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त होती है।

<u>पुरातात्विक स्त्रोत</u>: मुगलकालीन इमारते, स्मारक मुद्राएँ शासन के कलात्मक पक्ष को प्रकाशित करते है तथा काल-प्रकरण, ऐतिहासिक घटनाओं का भी उद्घाटन करते हैं। अकबरकालीन फतेहपुर सीकरी, जोधाबाई का महल, ताजमहल, लालकिला साम्राज्य के वैभव के साथ-साथ आर्थिक स्थिति को भी इंगित करते हैं। प्रतिकृति चित्र, रेखा चित्र, भित्ति चित्र हमारी कल्पना को प्रोत्साहित कर इस तथ्य का उद्घाटन करते हैं कि तत्कालीन घटनाओं के प्रधान पात्र कैसे रहते थे।

इस प्रकार मुगल काल के उपरोक्त स्त्रोत हमें तत्कालीन समय की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक स्थिति की गहन जानकारी उपलब्ध कराने में प्रामाणिक है, विश्वसनीय है।

Scanned with CamScanner